सेवा का दीदार

आये बाहर बन के
हो घोड़े पर तुम सवार,
ऐसा राज क्या था
जो कर ना सके दीदार,
दिल मे रहने वालों से
थी मिलने की दरकार,
समय था कुछ कम
हम कर ना सके सत्कार,
जीवन रुपी नाव की
तुम बन जाओ पतवार,
करो काम कुछ ऐसा
हो नैया सागर पार,
बिन मानव की सेवा के
यह जीवन होगा बेकार,
जी करे प्रेम हर जीव से
वो भगवान का अवतार,
स्वार्थ से जीने वाला
ना करे किसी से प्यार,
रोटी अपनी सेक कर
सबको कर देता दुत्कार,
उस सख्श को दुनिया मे
ना मिलता कभी सम्मान,
निर्मल ह्रदय से सेवा करो
ना करो कभी अभिमान,
जल की नन्ही बूंदों से
सागर पूरा भर जाता है,
मजलूम की सेवा से
इंसानी रूप निखारता है,

✍ गोपाल कृष्ण व्यास